कथा सरिता

कौन है सबसे महत्वपूर्ण

एक बार संकल्प, बल व रचनात्मकता में इस बात को लेकर विवाद हो गया कि सफलता का श्रेय किसे मिले। तीनों स्वयं को सबसे महत्वपूर्ण बता रहे थे। अंतत: यह तय हुआ कि विवेक की शरण में चलकर न्याय करा लिया जाए। विवेक ने समाधान करने के लिए तीनों को अपने साथ चलने को कहा और अपने हाथ में एक टेढ़ी कील व हथौड़ा ले लिया। चलते-चलते वे लोग एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ एक बालक खेल रहा था। विवेक ने बालक से कहा- ''पुत्र! यदि तुम इस टेढ़ी कील को हथौड़े से ठोककर सीधा कर दो तो मैं तुम्हें पुरस्कार दूंगा।'' पुरस्कार का नाम सुनकर बालक की आँखें चकम उठीं। वह संकल्पपूर्वक कील ठोकने का प्रयास करने लगा, परंतु कील सीधी होना तो दूर, उससे हथौड़ा हिला भी नहीं। यह देख विवेक ने कहा- ''सफलता हेतु अकेला संकल्प निरर्थक है।''

अब विवेक उन्हें लेकर आगे चला तो एक श्रमिक सोता हुआ मिला। विवेक ने उसके सम्मुख भी वही शर्त रखी, परंतु श्रमिक थोड़ी देर पहले ही परिश्रम करके सोया था। उसने हथौड़े को एक तरफ रख दिया और बोला - ''उसे पुरस्कार की कामना नहीं है, वह इस समय आराम करना चाहता है।'' विवेक ने निष्कर्ष निकाला - ''केवल बल भी सफलता हेतु पर्याप्त नहीं है।'' आगे चलने पर उन्हें एक कलाकार मिला। विवेक ने कलाकार से कील को सीधी करने का अनुरोध किया और बदले में वही शर्त रखी। कलाकार ने कील को रेतीली भूमि पर रखा और हथौड़े से चोट मारी। कील तो सीधी नहीं हुई, परंतु सभी की आँखों में रेत भर गई। अब विवेक ने कहा - ''सफलता प्राप्त करने के लिए अकेली रचनात्मकता भी पर्याप्त नहीं है। संकल्प, बल व रचनात्मकता - तीनों के सम्मिलित प्रयास से ही सफलता प्राप्त होती है।''

'दावा' सच्चा या झूठा

महान साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र पर एक महाजन ने तीन हज़ार रुपये का दावा कर दिया। उसका कहना था कि उन्होंने उससे एक नाव खरीदी थी और कुछ रुपये उधार लिए थे, जिन्हें वे अभी तक लौटा नहीं पाए हैं। न्यायाधीश ने भारतेंदु जी को अकेले में बुलाकर पूछा कि क्या यह दावा सही है और यदि उन्होंने नाव ली थी तो उसका वास्तविक मूल्य क्या था? न्यायाधीश को जवाब देते हुए भारतेंदु हरिश्चंद्र बोले - ''महोदय! दावे में लिखा मूल्य सही है और उधार ली गई नकद राशि भी सही है। इनका मुझपर इतने का ही दावा बनता है।'' वहाँ उपस्थित लोगों ने उन्हें समझाने का प्रयत्न किया कि वे चाहें तो न्यायाधीश को कम राशि की बात कह दें, ताकि उनको कम मूल्य देकर सज़ा से छुटकारा मिल सके।

सबकी बातों को दरकिनार करते हुए भारतेंदु हरिश्चंद्र ने महाजन के दावे को पुन: सही ठहराया। न्यायाधीश को उन्हें सज़ा सुनानी पड़ी। महाजन को जब सारी घटना की जानकारी मिली तो उसने कहा - ''आप एक जाने-माने लेखक हैं। यदि आप अपने दावे से मुकर भी जाते तो मैं आपका कुछ नहीं कर सकता था।'' भारतेंदु हरिश्चंद्र बोल- ''आपने ही कहा कि मैं एक जाना-माना लेखक हूँ। ऐसे में मेरी सत्य पर चलने की ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। यदि मैं असत्य बोलूंगा तो कल किस मुँह से लोगों को सत्य पर चलने की प्रेरणा दे सकूंगा!'' ''महाजन, भारतेंदु हरिश्चंद्र की सत्यवादिता से इतना प्रभावित हुआ कि उसने अपना केस वापस ले लिया।

रिक्त होने का कारण...

जर्मनी के सम्राट फ्रेडरिक महान यह जानकर चिंतित हो उठे कि उनके देश की आर्थिक स्थिति निरंतर दयनीय होती जा रही है। जब राजकोष काफी कम रह गया तो उन्होंने एक दिन अपने राज्य के अधिकारियों को विचार-विमर्श हेतु बुलाया और पूछा- ''राजकोष के रिक्त होने का कारण क्या है?'' दरबार में यह प्रश्न पूछते ही सन्नाटा छा गया और सभी एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। उन्हीं अधिकारियों में उपस्थित एक अनुभवी महामंत्री ने सम्राट से कहा कि वे इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए तैयार हैं। यह कहकर उन्होंने मेज पर प्याले में रखे बर्फ के एक टुकड़े को उठाया और उसे अपने निकट बैठे व्यक्ति को देते हुए कहा- ''इसे आपके पास बैठे व्यक्ति को दे दें। इसे एक के बाद एक-दूसरे हाथों में बढ़ाते हुए अंतत: सम्राट तक पहुँचाना है।'' देखते-ही-देखते वह बर्फ का टुकड़ा अनेक हाथों से होता हुआ सम्राट के हाथ तक पहुँचा। वहाँ पहुँचते तक उसका आकार चौथाई हो चुका था।

सम्राट ने पूछा- ''बर्फ का टुकड़ा तो यहाँ आते-आते छोटा हो गया है। इसके माध्यम से आप क्या कहना चाहते हैं?'' वृद्ध महामंत्री ने अपना मंतव्य स्पष्ट करते हुए कहा- ''महाराज! जिस तरह यह बर्फ का टुकड़ा कई हाथों से होता हुआ आपके हाथों तक पहुँचने में अपने मूल वज़न का चौथाई रह गया, वैसे ही प्रजा से वसूले गए कर की राशि कई हाथों से गुज़रने के कारण सरकारी कोष तक पहुँचते-पहुँचते चौथाई ही रह जाती है।'' सम्राट वृद्ध महामंत्री का कहा समझ गए और उन्होंने कड़े निर्णय लेते हुए भ्रष्ट कर्मचारियों की छँटनी शुरू कर दी। कुछ ही दिनों में राजकोष में बढ़ोत्तरी होने लगी।

सेवा और साधना दोनों ही

एक संत से एक युवक ने पूछा - ''महाराज! मैं अपने कार्यों में अत्यंत व्यस्त रहता हूँ। उपासना-साधना के लिए समय नहीं निकाल पाता हूँ। तनाव रहने के कारण रात को नींद की गोली लेकर सोना पड़ता है। तनाव कम करने के लिए कोई सरल उपाय बताने की कृपा करें।'' संत ने उत्तर दिया- ''बंधु! सुबह काम पर जाने से पहले माता-पिता के चरण-स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लो। साथ ही अपनी कमाई का कुछ अंश, गरीबों और असहायों की सेवा के लिए अर्पित करना प्रारंभ करो।'' उस युवक ने उसी दिन से संत की बतलाई बातों का पालन आरंभ कर दिया। वो माता-पिता के चरण स्पर्श ही नहीं अपितु अच्छी तरह से उनकी सेवा करने लगा। साथ ही अपने तन मन धन से गरीबों की भी सेवा करने लगा।

कुछ महीने बाद जब वह संत के दर्शन के लिए पुन: आया तो प्रसन्नचित्त होकर बोला - ''महाराज! आपकी बताई बातों से मेरा कार्यों में मन लगने लगा है, परंतु अभी रात्रि की निद्रा की समस्या का समाधान नहीं हो पाया है।'' संत बोले- ''मित्र! तुमने अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित किया है, इससे कार्यों से मिलने वाला तनाव समाप्त हो गया है। परंतु निद्रा की समस्या पहले से बैठे तनावों के कारण है। उनकी मुक्ति के लिए तुम्हें साधना की ज़रूरत है, जिससे तुम्हारी आध्यात्मिक जागृति होगी और तुम्हारा पूर्व-संचित दुष्कर्मों का क्षय होता जायेगा, जिससे चित्त निर्भार होता जायेगा। चित्त के हल्का होते ही मन स्वत: ही शिथिल हो जाता है।'' युवक ने उनके निर्देश का पालन कर साधना आरंभ कर दी, जिससे वह तनावमुक्त रहने लगा।

शिकोहाबाद-उ.प्र.। प्रजापिता ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस पर कार्यक्रम के दौरान फिरोज़ाबाद के सांसद अक्षय यादव, समाजवादी पार्टी के जिला अध्यक्ष दिलीप यादव तथा जे.एस. युनिवर्सिटी, शिकोहाबाद के वाइस चांसलर सुकेश यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पूनम। साथ हैं ब्र.कु. पूनम।

पुरी-ओडिशा। 'नेशनल कन्वेन्शन ऑन सत्यमेव जयते, अहिंसा परमोधर्म तथा श्रीमद्भगवद् गीता' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. बृजमोहन, डॉ. पुष्पा पाण्डेय, प्रो. हरेकृष्ण सत्यपथी, प्रो. अलख चंद्र सारंगी, पूर्व इनफॉर्मेशन कमिश्नर जगदानंद जी, प्रो. सुरेन्द्र मोहन मिश्रा, प्रो. बिनायक राठ, डॉ. सुरेश्वर मेहर, ब्र.कु. डॉ. निरूपमा तथा ब्र.कु. डॉ. प्रसन्ना कुमार।

हाथरस। गणतंत्र दिवस के कार्यक्रम में मुलाकात के दौरान जिलाधिकारी अविनाश कृष्ण सिंह, ब्र.कु. पंचम सिंह, ब्र.कु. शान्ता तथा अन्य।

कोटा-राज.। राजगंज मण्डी में अग्रवाल समाज द्वारा आयोजित विशाल कुम्भ में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लगाई गई चैतन्य देवियों की झाँकी, आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी तथा अन्य आध्यात्मिक कार्यक्रमों का उद्घाटन करते हुए ब.कु. उर्मिला, ब्र.कु. मंजू,छ.ग., अग्रवाल समाज के डॉ. डी.एल. गुप्ता, ब्र.कु. शीतल तथा अन्य।

मुज़फ्फरनगर-केशवपुरी(उ.प्र.)। 'वाह ज़िन्दगी वाह' कार्यक्रम में शहर के गणमान्य लोगों को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुधा,रशिया।

जम्मू। नाबार्ड बैंक में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में चीफ जेनरल मैनेजर विजय कुमार, मैनेजमेंट स्टाफ, ब्र.कु. रविन्दर, ब्र.कु. कुसुम लता, ब्र.कु. सुरेन्द्र तथा ब्र.कु. रमा।